श्रीसीतारामाभ्यां नमः ॥

श्रीमतेरामानन्दाय नमः॥

तदस्त्रं तस्यवीरस्य स्वर्ग मार्ग प्रभावनम् ।
रामबाणासनक्षिप्त मावहत्परमां गतिम् ॥

श्रीवाल्मीकीय रामायणे किष्किन्धा काण्डे १७ सर्गः श्रीरामभद्रके धनुष्य से छूटे हुए उस बाण ने उस बीर बालिको परमगति (श्रीसाकेत लोक) को प्राप्त कराया वह बाण स्वर्ग (दिव्य धाम साकेत वासान्तानिक) मार्गका प्रकाशक है, वह श्रीरामनामसे अंकित है (रामनामांकितैः शरैः) उससे मुमुक्षुवों को मोक्ष प्रद है ।

असारे खलुसंसारे चित्तचिन्तापरित्यज ।
अखिलानन्ददंधाम चित्रकूटं चलाचलम् ॥
रामनामैव नामैव रामनामैव केवलम् ।
कलौनास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ॥

परमहंस सरयूदास श्रीरामनामाश्रित ।

गायन्ति रामनामानि वैष्णवाश्च युगेयुगे । त्यक्त्वा च सर्वकर्माणि धर्माणि च कपिध्वज ॥

रामनामैव नामैव रामनामैव केवलम् । गतिस्तेषां गतिस्तेषां गतिस्तेषां स्मृतिश्चितम् ॥

* श्रीसीतारामाभ्यां नमः *

❁ समर्पण ❁

प्रभो ! करुण वरुणालय । न जाने कितनी योनियों में जन्मा मरा और क्या क्या किया, कुछ ठिकाना है कृपा करके आपने यह मनुष्य शरीर दिया । नव महीने माता के गर्भ में था । उस नितांत निस्सहाय अवस्था में, उस कठिन दुःख मय समय में भी आपने रक्षा की । उस नरकागार से बाहर निकाला । क्षुधा शान्ति के लिए माता के स्तनों में तत्काल दुग्ध उत्पन्न किया । वस्तुतः आपकी निर्हेतु की कृपा ही से पल, जीकर मैंने होश सँभाला । पर इस संसार की हवा लगते ही आपकी (वैष्णवी) माया के विलास से वह गर्भवाली आर्त्त-दशा की प्रतिज्ञा भूल गया—

यदि योन्याः प्रमुच्येऽहं तत्प्रपद्ये महेश्वरम् ।
अशुभक्षय कर्त्तारं फलमुक्ति प्रदायकम् ॥

(गर्भोपनिषत्)

और नाना प्रकार के सांसारिक व्यवहारों में बझगया । पर आपकी कृपा ने साथ नहीं छोड़ा । उसने फिर भी खींच कर श्रीसन्मुख कर ही दिया । संत, समाज के बीच आपके धाम (श्रीअयोध्या) में प्राप्त कर दिया । तब से जो कुछ हो सका किसी भी प्रकार से आपके नाम ही बेंचकर उदर पूर्ण

किया। आपकी कृपा से हरएक कार्य्य में सफलता प्राप्त हुई। पर अब चित्त उपराम को प्राप्त हो रहा है, किसी भी शुभाशुभ कार्य्यमें अब जी नहीं लगता। अतः प्रार्थना है कि इस अबकी जो शेष आयु है, सो पुष्पांजलिरुप आपके चरण कमलोंमें समर्पण करता हूं। इसे स्वीकार करके अपने एकांत भजनकी प्रवृत्ति दें और अपने चरणोंमें अनन्य एवम् शुद्ध भाव से लगालें क्योंकि जब तक आपकी कृपा नहीं होती है तब तक जीव का उद्धार नहीं होता है। चाहै कितने ही उपाय क्यों न करे, यथा मेरी नवने बनाये मेरे कोटि कल्प लौं राम रावरे बनाये बने पल पाउ में इत्यादि।

यह मेरा अन्तिम ग्रन्थहै परम श्रद्धास्पद गोस्वामी श्रीतुलसीदासजीने अपने मानस के अन्तमें जिस "सत पंच चौपाई" की बात लिखी है उसी पर इस पुस्तक में यथा मति विचार किया है उसमें आपही के श्रीनाम की अमोघ महिमा और यश है अतएव निज नामके नाते इसे अपनाइए और कृतार्थ कीजिए।

मेरा मुझको कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपने क्या लागै है मोर॥

श्रीअयोध्याजी
श्रावण शुक्ल ७।
संवत् १९८० वै०

श्रीचरणाश्रित जन
सरयूदास।

श्रीसीतारामाभ्यां नमः ॥

श्रीमते रामानन्दाय नमः ॥

रामानन्द महंबन्दे वेद वेदान्त पारगम् ॥
राम मंत्र प्रदातारं सर्व लोकोपकारकम् ॥ १ ॥

वात्सल्यादि गुणैक कारण परं सिद्धैः सदाऽनुष्ठितं योगीन्द्रैः सनकादि भिश्च सततं मुक्तै र्मुदा चिन्तितम् । सर्वा घौघनिकृन्तनं श्रुति शिरोवेद्यं विदांशाश्वतं बन्दे मंत्र कदम्ब कारणतमं श्रीतारकं मुक्तिदम् ॥

श्रीहनुमन्नाटके ।

कल्याणानां निधानं कलिमल मथनं पावनं पावना नाम् पाथेऽयंयन्मुमुक्षोः सपदि परपदप्राप्तये प्रस्थितस्य । विश्राम स्थानमेकं कविवर वचसां जीवनं सज्जनानाम् बीजं धर्म द्रुमस्य प्रभवतु भवता म्भूतये राम नाम ॥

महाशंभुसंहितायाम् ।

मुक्तिस्त्रीकर्ण पूरौ मुनिहृदय वयः पक्षती तीर भूमौ दांतारापारसिंधोः कलिकलुष तमस्तोम

सोमार्क विम्बौ । उन्मीलत् पुण्य पुञ्ज द्रुम ललित दलेलोचने च श्रुतीनां कामं रामेति वर्णौ शमिह कलयतां सन्ततं सज्जनानाम् ॥

श्रीसनक मनातन संहितायाम् ।

हेजिह्वे मधुर प्रियेसुमधुरं श्रीरामनामात्मकं पीयूषं पिव प्रेम भक्ति मनसाहित्वा विवादानलम् । जन्म व्याधि कषाय काम शमनं रम्याति रम्यम् परं श्रीगौरीश प्रियं सदैव शुभगं सर्वेश्वरं सौख्यदम् ॥ नाना तर्क वितर्क मोह गहने क्लिश्यन्तिये मानवा स्तेषां श्रीरघुवीर नाम विमलं सर्वात्मना सौख्यदम् । प्रेमानन्द पवित्र रंग रमणं सर्वाधिपं सुन्दरं दृष्टं बोध मयं विचित्र रचनं सर्वोत्तमं शाश्वतम् ॥

श्रीवाराह पुराणे ।

दैवाच्छूकर शावकेन निहतोम्लेच्छो जराज-र्ज्जरो हारामेणहतोस्मि भूमि पतितो जल्पंस्तनुं त्यक्तवान् । तीर्णो गोष्पद वद्भवार्णव महोनाम्नः प्रभावादहो किंचित्रं यदि राम नाम रसिकास्ते यान्ति रामास्पदम् ॥ ध्येयं नित्यमनन्य प्रेम रसिकैः

पेयं तथा सादरम् ज्ञेयं ज्ञानरतात्म भिक्षुसुजनैः सम्यक् क्रियाशान्तये । श्रीमद्राम परेश नाम शुभगं सर्वाधिपं शर्मदम् सर्वेषां सुहृदं सुरासुर नुतं ह्यानन्द कन्दं परम् ॥

श्रीवशिष्ठरामायणे ।

नानातर्क विवाद गर्त गुहरे पाताश्रये जन्तवस्तेषामेकम संशयं सुशरणं श्रीरामनामात्मकं । मन्त्रं नास्ति यतः परं सुललितं प्रेमास्पदं पावनं स्वल्पायास फल प्रदान परमं प्रोत्कर्ष सौख्यप्रदम् ॥

श्रीशिवसिद्धान्ते ।

ब्रह्मघ्नो गुरुतल्पगोपि पुरुषः स्तेयीसुरापो पिवा मातृभ्रातृ विहिंसकोपि सततं भोगैक बद्धस्पृहम् । नित्यं राममिमं जपं रघुपति भक्त्या हृदिस्थं तथा ध्यायन्मुक्ति मुपैतिकिं पुनरसौ स्वाचार युक्तोवरः ॥

श्रीकाशीखण्डे ।

पेयं पेयं श्रवण पुटकेरामनामाभिरामं ध्येयं ध्येयं मनसि सततं तारकं ब्रह्मरूपम् । जल्प्यं जल्प्यं प्रकृति विकृतौ प्राणिनां कर्णमूले वीथ्यां वीथ्या मटति जटिलः कोपि काशी निवासी ॥

श्रीमानस रामायणे ।

ब्रह्माम्भोधि समुद्भवं कलिमल प्रध्वन्सनं चाव्ययम् श्रीमच्छंभु मुखेन्दु सुन्दरवरं संशोभितं सर्वदा । संसारामय भेषजं सुखकरं श्रीजानकी जीवनं धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीराम नामामृतम् ॥

(मूल) मत पंच चौपाई मनोहर ।

दोहा ।

भनिति मोरि सबगुन रहित, बिस्व बिदित गुन एक।
सोबिचारि सुनिहहिं सुमति, जिन्हके बिमल बिबेक ॥

एहि महुँ रघुपति नाम उदारा * अति पावन पुरान श्रुतिसारा ॥
मंगल भवन अमंगल हारी * उमा सहित जेहि जपत पुरारी ॥
भनिति विचित्रसुकविकृतजोऊ * रामनाम बिनु सोह न सोऊ ॥
बिधु बदनी सब भाँति सवारी * सोह न बसन बिना बर नारी ॥
सबगुन रहित कुकवि कृतबानी * रामनाम जस अंकित जानी ॥
सादर कहहिं सुनहिं बुधताही * मधुकर सरिस संत गुनग्राही ॥

दोहा ।

गिरा अरथ जल बीचि सम, कहियत भिन्नन भिन्न ।
बन्दौं सीताराम पद, जिन्हहि परम प्रिय खिन्न ॥

बन्दौं नाम राम रघुबर को * हेतुकृसानु भानु हिम करको ॥
विधि हरिहर मय वेद प्रानसो * अगुन अनूपम गुन निधानसो ॥
महामन्त्र जोइ जपत महेसू * काशी मुकुति हेतु उपदेसू ॥
महिमा जासुजान गन राऊ * प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ ॥
जान आदि कवि नाम प्रतापू * भएऊ सुद्ध करि उलटा जापू ॥
सहसनामसम सुनिशिवबानी * जपिजेई पिय संग भवानी ॥
हरषे हेतु हेरि हर हीको * किए भूषन तिय भूषन तीको ॥
नाम प्रभाव जान सिव नीको * कालकूट फल दीन्ह अमीको ॥

दो०-बरषारितु रघुपति भगति, तुलसी सालि सुदास ॥
रामनाम बर बरनजुग, सावन भादव मास ॥

आखर मधुर मनोहर दोऊ * बरन विलोचन जन जियँ जोऊ॥
सुमिरतसुलभ सुखदसबकाहू * लोक लाहु परलोक निबाहू ॥
कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके * रामलषन समप्रिय तुलसीके ॥
बरनत बरन प्रीति बिलगाती * ब्रह्मजीव सम सहज संघाती ॥
नर नारायण सरिस सुभ्राता * जगपालक बिशेष जन त्राता ॥
भगतिसुतियकलकरनविभूषन * जगहित हेतु विमलविधुपूषन॥
स्वाद दोष समसुगति सुधाके * कमठशेष सम धरब सुधाके ॥
जन मन मंजु कंज मधु करसे * जीहजसोमति हरिहलधरसे ॥

* दोहा *

एक छत्रु एक मुकुट मनि, सब बरननि पर जोउ ।
तुलसी रघुबर नाम के, बरन बिराजत दोउ ॥

समुझत सरिस नाम अरु नामी * प्रीति परसपरप्रभुअनुगामी ॥
नाम रूप दुइ ईस उपाधी * अकथअनादिसुसामुझिसाधी॥
को बड़ छोट कहत अपराधू * सुनिगुनभेद समुझिहहिं साधू॥

देखि अहिरूप नाम आधीना * रूपज्ञान नहिं नाम विहीना ॥
रूप बिसेष नाम बिनु जाने * करतल गत नपरहिंपहिचाने॥
सुमिरिए नाम रूप बिनु देखें * आवत हृदयँ सनेह बिसेषें ॥
नामरूप गुन अकथ कहानी * समुझत सुखदनपरतिबखानी॥
अगुन सगुन बिचनामसुसाखी* उभयप्रबोधक चतुर दुभाषी ॥

* दोहा *

राम नाम मनि दीप धरु, जीह देहरीं द्वार ।
तुलसी भीतर बाहेर, जौं चाहसि उजियार ॥

नामजीहँ जपि जागहिं जोगी * बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी॥
ब्रह्म सुखहि अनुभवहिअनूपा * अकथ अनामय नामन रूपा ॥
जानी चहहिं गूढ़ गति जेऊ * नाम जीह जपि जानहु तेऊ ॥
साधक नाम जपहिं लयँ लाएँ * होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ॥
जपहिं नाम जन आरत भारी * मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी॥
राम भगत जग चारि प्रकारा * सुकृती चारिउ अनघ उदारा ॥
चहूँ चतुर कहुँ नाम अधारा * ज्ञानी प्रभुहिं बिसेषि पियार ॥
चहुँ जुग चहुं श्रुति नाम प्रभाऊ*कलि बिसेषि नहिं आन उपाऊ ॥

॥ दोहा ॥

सकल कामना हीन जे, राम भगति रस लीन ।
नाम प्रेम पीयूष हृद, तिन्हहुं किए मन मीन ॥

अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा * अकथअगाध अनादि अनूपा ॥
मोरें मत बड़ नाम दुहूँतें *किएजेहिंजुगनिजबसनिजबूतें॥
प्रौढ़ि सुजनजनिजानहिंजनकी*कहउँ प्रतीतिप्रीतिरुचिमनकी ॥
एक दारु गत देखिए एकू * पावक समजुग ब्रह्म बिबेकू ॥

उभय अगम जुग सुगम नामतें * कहेउँ नाम बड़ ब्रह्म रामतें ॥
ब्यापक एक ब्रह्म अविनासी * सत चेतन घन आनंद रासी ॥
अस प्रभु हृदयँ अछत अविकारी * सकल जीव जग दीन दुखारी ॥
नाम निरूपन नाम जतन तें * सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें ॥

*** दोहा ***

निरगुन तें एहिभाँति, बड़ नाम प्रभाउ अपार ।
कहउँ नाम बड़ राम तें, निज बिचार अनुसार ॥

राम भगत हित नर तनुधारी * सहि संकट किए साधु सुखारी ॥
नाम सप्रेम जपत अनयासा * भगत होहिं मुद मंगल बासा ॥
राम एक तापस तिय तारी * नाम कोटि खल कुमति सुधारी ॥
रिषिहित राम सुकेतु सुताकी * सहित सेन सुत कीन्हि बिबाकी ॥
सहित दोष दुख दास दुरासा * दलइ नाम जिमि रबि निसि नासा ॥
भंजेउ राम आपु भव चापू * भवभय भंजन नाम प्रतापू ॥
दंडक बन प्रभु कीन्ह सुहावन * जनमन अमित नाम किए पावन ॥
निसिचर निकर दले रघुनंदन * नाम सकल कलि कलुष निकंदन ॥

*** दोहा ***

सबरी गीध सु सेवकनि, सुगति दीन्हि रघुनाथ ।
नाम उधारे अमित खल, बेद बिदित गुन गाथ ॥

राम सुकंठ बिभीषन दोऊ * राखे सरन जान सब कोऊ ॥
नाम गरीब अनेक नि वाजे * लोक बेद वर बिरद बिराजे ॥
राम भालु कपि कटक बटोरा * सेतु हेतु श्रम कीन्हन थोरा ॥
नाम लेत भवसिंधु सुखाहीं * करहु बिचार सुजन मनमाहीं ॥
राम स कुल रन रावन मारा * सीय सहित निजपुर पगुधारा ॥

राजा राम अवध रजधानी * गावत गुनसुर मुनिवर बानी ॥
सेवक सुमिरत नाम सप्रीती * बिनुस्रम प्रबल मोह दलजीती ॥
फिरत सनेह मगन सुषअपने * नाम प्रसाद सोच नहिं सपने ॥

दोहा ।

ब्रह्म रामतें नाम बड़, बरदायक बरदानि ।
रामचरित सतकोटि महँ, लिए महेस जियजानि ॥

नाम प्रसाद संभु अविनासी * साज अमंगल मंगल रासी ॥
सुकसनकादि सिद्ध मुनिजोगी * नाम प्रसाद ब्रह्म सुष भोगी ॥
नारद जानेउँ नाम प्रतापू * जगप्रियहरिहरहरिप्रिय आपू ॥
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू * भगत सिरोमनि भे प्रहलादू ॥
ध्रुवसगलानि जपेउ हरिनाऊँ * पायेउ अचल अनूपम ठाऊँ ॥
सुमिरि पवनसुत पावन नामू * अपने बस करि राषे रामू ॥
अपतअजामिल गजगनिकाऊ * भए मुकुत हरिनाम प्रभाऊ ॥
कहौं कहां लगि नाम बड़ाई * राम न सकहिं नाम गुन गाई ॥

दो०-नामराम को कलप तरु, कलि कल्यान निवास ॥
जो सुमिरत भयो भाँगते तुलसी तुलसीदास ॥

चहुँजुग तीनिकाल तिहुँलोका * भये नामजपि जीव बिसोका ॥
बेद पुरान सन्तमत एहू * सकल सुकृत फल राम सनेहू ॥
ध्यानप्रथमजुगमख विधिदूजें * द्वापर पर तोषत प्रभु पूजें ॥
कलि केवल मलमूल मलीना * पाप पयोनिधि जन मनमीना ॥
नाम कामतरु काल कराला * सुमिरतसमनसकलजगजाला ॥
रामनाम कलि अभिमत दाता * हित पर लोक लोक पितुमाता ॥
नहिंकलिकरमनभगति विवेकू * राम नाम अवलंब न एकू ॥
कालनेमि कलि कपट निधानू * नाम सुमति समरथ हनुमानू ॥

दोहा ।

राम नाम नर केसरी, कनक कसिपु कलि काल ।
जापक जन प्रहलाद जिमि, पालिहि दलि सुरसाल ॥

भाँय कुभाँय अनष आलसहूं * नामजपत मंगल दिसि दसहूं ॥
सुमिरि सोनाम रामगुन गाथा * करौं नाइ रघुनाथहिं माथा ॥
रामनाम कर अमिति प्रभावा * संतपुरान उपनिषद गावा ॥
संतत जपत संभु अविनासी * सिव भगवान ज्ञान गुनरासी ॥
आकर चारि जीवजग अहहीं * कासी मरत परमपद लहहीं ॥
सोपिराम महिमा मुनिराया * सिव उपदेसकरत करिदाया ॥
तुम्हपुनि राम नाम दिनराती * सादर जपहु अनंग अराती ॥
जासु नामभ्रम तिमिर पतंगा * तेहिकिमिकहियविमोहप्रसंगा ॥

दोहा ।

राम नाम अवलंब बिनु, परमारथ की आस ।
बरषत बारिद बूँद गहि, चाहत चढन अकास ॥

कासी मरत जंतु अवलोकी * जासुनाम बलकरउँ बिसोकी ॥
विवसहु जासु नाम नर कहहीं * जनमअनेक रचित अघदहहीं ॥
सादर सुमिरन जो नर करहीं * भववारिधि गोपद इवतरहीं ॥
जाकर नाम सुनत सुभ होई * मोरे गृह आवा प्रभु सोई ॥
जिन्हकर नाम लेत जगमाही * सकल अमंगलमूल न साहीं ॥
जासुनाम सुमिरत एक बारा * उतरहिं नर भव सिंधु अपारा ॥
रामराम कहिजे जबुहाहीं * तिन्ह इन पाप पुञ्ज समुहाहीं ॥
उलटा नाम जपत जग जाना * बालमीकि भए ब्रह्म समाना ॥

* दोहा *

राम नाम पर रामतें, प्रीति परतीति भरोस ॥
सो तुलसी सुमिरत सकल, सगुन सुमङ्गल कोस ॥

राम नाम महिमा सुर कहहीं * सुनिसुनिअवधलोगसुखलहहीं ॥
बारक राम कहत जग जेऊ * होत तरन तारन नर तेऊ ॥
जासु नाम पावक अघ तूला * सुमिरत सकल सुमंगल मूला ॥
जाकर नाम मरत मुख आवा * अधमौमुकुति होइ श्रुतिगावा ॥
जद्यपि प्रभु के नाम अनेका * श्रुतिकहँ अधिक एकते एका ॥
राम सकल नामन्हतें अधिका * होउ नाथ अघखगगनबधिका ॥

दोहा ।

राका रजनी भगति तव, राम नाम सोइ सोम ।
अपर नाम उडगन विमल, बसहु भगत उर व्योम ॥

जन्म जन्ममुनि जतन कराहीं * अंत राम कहि आवत नाहीं ॥
जासु नाम बल संकर कासी * देत सबहिं समगति अविनासी ॥
जासु नाम जपिसुनहु भवानी * भव बंधन काटहि नर ज्ञानी ॥
राम नाम बिनु गिरा न सोहा * देखु विचारि त्यागि मद मोहा ॥
तीरथ अमितकोटिसमपावन * नाम अखिल अघपूग नसावन ॥

दोहा ।

नाम राम को अंक है, सब साधन है सून ।
अंक गए कछु हाथ नहीं अंक रहे दस गून ॥

(माहात्म्य लिख्यते)

कलिजुग जोगन जग्य न ज्ञाना * एक अधार राम गुन गाना ॥
सबभरोस तजि जोभजरामहिं * प्रेम समेत गाव गुन ग्रामहिं ॥
सोइभवतर कछु संसय नाहीं * नाम प्रताप प्रगट कलिमाहीं ॥
एहिकलि कालन साधन दूजा * जोग जग्य जप तप व्रत पूजा ॥
रामहिं सुमिरिए गाइएरामहिं * संतत सुनिए रामगुनग्रामहीं ॥
जासु पतित पावन बड़ बाना * गावहिं कवि श्रुति संत पुराना ॥
ताहिभजिएमनतजिकुटिलाई * रामभजे गति केहि नहि पाई ॥

छंद ।

पाई न केहि गति पतित पावन रामभजि सुनु सठमना ॥
गनिका अजामिल व्याध गीध गजादि षल तारे घना ॥
आभीर जमन किरात षस स्वपचादि अति अघरूपजे ॥
कहि नाम वारक तेपि पावन होहिं राम नमामिते ॥
रघुवंस भूषन चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं ॥
कलिमल मनोमल धोइ बिनु श्रमरामधाम सिधावहीं ॥
सतपञ्च चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरे ॥
दारुन अविद्या पञ्चजनित विकार श्रीरघुबर हरे ॥
सुन्दर सुजान क्रिपा निधान अनाथपर कर प्रीति जो ॥
सो एक राम अकाम हित निर्वान प्रद सम आनको ॥
जाकी कृपा लव लेस तें मतिमन्द तुलसी दास हूँ ॥
पायो परम विश्रामु राम समान प्रभु नाहीं कहूँ ॥

दोहा ।

मो सम दीनन दीन हित, तुम समान रघुवीर ।

अस बिचारि रघुबंस मनि, हरहु विषम भवभीर ॥
एह कलिकाल मला यतन, मन करि देखु विचारि।
श्रीरघुनाथ नाम तजि, नाहि न आन अधार ॥

सतपंच चौपाई मनोहर का अर्थ ॥

सब सज्जनों की सेवा में प्रथम कुछ निवेदन करके पश्चात् सप्तपञ्च चौपाई मनोहर का अर्थ निवेदन करूँगा। श्रीगीता जी में कहा है कि "त्रैगुण्य विषया वेदानि स्त्रैगुण्योभवाऽर्जुन" इस कथन के अनुसार जितने वेद शास्त्र और पुराण हैं सो सब त्रिगुणात्मक हैं। इसी से श्रीव्यासादिक ऋषियों ने सब के मतों को कहते हुए अन्त में सर्वोपरि सिद्धांत मत को कहा है। जैसा कि पद्मपुराण के उत्तरखण्ड में मत्स्यपुराण के अंतिमाध्याय में और श्रीगीता के १८ अध्याय में विस्तार से वर्णन है। यदि ऋषि लोग ऐसा विभाग न कर देते तो सिद्धांत मत का पता भी नहीं चलता। विभाग करने पर भी तो बड़े २ विद्वान् लोग भटका खाते हैं। बिना विभाग किए क्या दशा होती। उसी प्रकार से पूज्यपाद श्रीगोस्वामीजी ने भी "कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई। इस लेखानुसार सब के मतों को कहते हुए अंततोगत्वा महाजनो येन गतः स पन्था इस वचन के अनुसार॥ सकल सयाने एकमत अर्थात् सब सज्जनोंके एक सिद्धांत मत है उसी को कहा है। यद्यपि श्रीरामायणमें सर्वत्र सिद्धांत को कहते आए हैं तथापि अंतमें स्पष्ट रूपसे फिर भी दिखाते हैं। जिसे कि सारग्राही सज्जन लोग सहजमें समझ लेवें।

इसीलिए श्रीगोस्वामी जी कहते हैं कि सतपंच चौपाई मनोहर अर्थात् श्रीरामनाम बन्दनावाली जो नवो दोहों की चौपाइयां हैं सो सब सतपञ्च चौपाई मनोहर हैं क्योंकि श्रीरामनाम में दादूरामजी, पलटूदासजी, जगजीवनदासजी, गुरुनानकदासजी, कबीरदासजी, श्रीसूरदासजी, आदि जितने सांप्रदायिक और पन्थाई महात्मा होगए हैं सब के एक सम्मत है, और साधनों में नहीं फिर भी श्रुति, स्मृति और पुराणों के भी सार एक श्रीराम नाम ही है दूसरा नहीं यथा—

विष्णु पुराणे।

रामनाम्नः परं किंचित्तत्त्वं वेदेस्मृतिष्वपि।
संहितासु पुराणेषु नैव तंत्रेषु विद्यते॥

अर्थात् श्रीरामनाम से परे तत्ववेद, शास्त्र, पुराण, संहिता तथा तंत्र में भी कुछ नहीं है। पुनः। आदि पुराणे। नामैव वेद सारांशं सिद्धान्तं सर्वदा शिवम्। पुनः। लोमश संहितायां। रामनाम्नः परं तत्त्वं नास्ति किंचिज्जगत् त्रये। और श्रीरामनाम ही का महत्व वेद में भी लिखा है यथा- न तस्य प्रतिमाऽस्ति यस्य नाम महद्यशः। अर्थात् जिस ब्रह्म के नाम का महान् यश है उस ब्रह्म के समान दूसरा कोई नहीं है। इसी श्रुति की स्पष्टरूप से व्याख्या सात्विक "पद्मपुराण" में है यथा।

छोदिशतियन्मंत्रंयस्यनाममहद्यशः।
तस्यनास्त्युपमा क्वापितं रामं राघवम्भजे॥

अर्थात् भगवान् शिवजी काशीपुरी में जिस षडक्षर मन्त्र-

मन्त्र को मरणकाल में सबको उपदेश करते हैं, वेद कहता है कि जिसके नाम का महान् यश है उसकी उपमा कहीं भी नहीं है। उस श्री राघवराम को मैं भजता हूँ। इत्यादि कहा है इस से वेद में भी तत्त्व श्रीराम नामही है। विस्तार से वेदार्थप्रकाश रामायण में वर्णन है। श्रीगोस्वामीजी ने भी यही कहा है यथा एहि महुँ रघुपति नाम उदारा। अतिपावन पुरान श्रुतिसारा॥ इत्यादि। श्रीगोस्वामीजी के भी सब ग्रन्थों में एक श्रीरामनाम ही सार है फिर भी देखिए। नहिं कलि करम न भगति बिबेकू। राम नाम अवलम्बन एकू॥ इत्यादि वचनों से कलिकाल में एक केवल श्रीरामनाम ही अधार है। दूसरा जप, तप, तीर्थ, व्रत, दान, पुण्य, योग, यज्ञ, ज्ञान, वैराग्य और नवधा भक्ति आदि साधन कुछ नहीं है यह सबका सिद्धांत है। फिर निर्गुण सगुण दोनों से बड़े दोनों के साक्षी और प्रकाशक श्रीरामनाम ही हैं तथा सौकोटि श्रीरामायण का भी सार श्रीरामनाम ही है इससे सतपंच चौपाई मनोहर श्रीनामहीं वन्दनावाली चौपाइयां हैं दूसरी नहीं क्योंकि कलिकालमें अन्य साधन नहीं है सो भी ग्रंथ समाप्ति में स्पष्ट ही लिखा है यथा–

यह कलिकाल मलायतन, मन करि देखि विचार।
श्रीरघुनाथ नाम तजि, नाहिंन आन अधार॥

इससे निश्चय हो गया कि सत पंच चौपाई दूसरी नहीं है। कोई २ सज्जन लोग सतपंच का १०५ चौपाई अर्थ करते हैं वे भी श्रीनामहीं संबन्धवाली चौपाइयां हैं सो सब लिख दी गई हैं जिनकी इच्छा हो मिलाकर देख लेवें। सोई श्रीगोस्वामीजी कहते हैं कि सतपंच चौपाई मनोहर का जो सिद्धांत श्रीराम नाम है उसको जोजन जानकर हृदयमें धारण करते हैं अथवा करेंगे उनके दारुण नाम महाकठिन जो पंच अविद्या है अर्थात्

तम १ मोह २ महामोह ३ तामिस्र ४ अंधता मिस्र इति पंचपर्वा अविद्या से जो जनित नाम उत्पन्न है नानाप्रकार का विकार वे सब रघुवर हर लेते हैं भाव बिना श्रीरामनाम को जपे पंच अविद्या करके जनित नाना विकार नाश नहीं हो सकते हैं। और मनोहर कहकर श्रीरामनाम संबंधवाली चौपाइयों को ग्रन्थकार स्वामी ने सूचित किया है क्योंकि श्रीनाम वन्दना में कहा है "आखर मधुर मनोहर दोऊ" और नामही का प्रतिपादन नव दोहों पर्य्यन्त है इसीसे सब चौपाइयोंको मनोहर जानना चाहिए और नव दोहों तक वन्दना करने का भाव यही है कि अंक का प्रमाण नव ही तक है आगे शून्य है भाव श्रीरामनाम अंक है और सभी साधन शून्य हैं। श्रीरामनाम जपने से सब साधन दश गुण फल दायक होते हैं नहीं तो नाम बिना सब वृथा है आदि पुराणमें श्रीकृष्णजीने अर्जुन से कहा है यथा—

गायन्ति राम नामानि कर्म कुर्वन्ति चाखिलम्।
मयाति परमं स्थानं रामेण सहमोदते॥
विसृज्य रामनामाभि कर्म कुर्वन्ति चाखिलम्।
किमाश्चर्यं किमाश्चर्यं किमाश्चर्यं धनंजय॥

अर्थात् श्रीराम नाम को जपते हुए जो सम्पूर्ण कर्मको करते हैं वे परम स्थान श्रीसाकेत को प्राप्त होकर श्रीरामजी के साथ आनन्द करते हैं। जो श्रीरामनाम छोड़कर सम्पूर्ण कर्म करते हैं। हे अर्जुन! उनको परमधाम की प्राप्ति होनी और श्रीरामजी के साथ "भोग मात्र साम्यलिङ्गाच्च" इस

ब्रह्मसूत्र के अनुसार आनन्द का प्राप्त होना आश्चर्य है आश्चर्य है आश्चर्य है। भाव त्रिकाल में भी प्राप्त हो नहीं सकता है। पुनः दोहावली—नाम रामको अंक है, सब साधन है सून। अंक गए कछु हाथ नहिं, अंक रहे दसगून ॥ इत्यादि कहा है।

जब शुक्ला श्रावण सप्तमी को श्रीगोस्वामीजी परमधाम श्री साकेतलोकको जानेलगे तब सब काशीवासी दर्शन करनेको आए। और सब सज्जनोंने श्रीगोस्वामीजीसे प्रश्न किया कि भगवन् हम सबको क्या करना चाहिए और कैसे कल्याण होगा सो कहिये। यह सुन कर श्रीगोस्वामीजी अनेकों उपदेश करते हुए अन्त में यह बोले।

कवित्त :

अलप तो अवधि जीव में तामे बहु सोच पोच करिबे को बहुत है काह काह कीजिए। पारन पुरानहु को वेदहु को अन्त नाहिं वानी तो अनेक चित्त कहँ कहँ दीजिए। काव्य की कला अनन्त छन्द को प्रबन्ध बहु राग तो रसीले रस कहँ कहँ पीजिए। सब बातन की एक बात तुलसी बताय जात जनम जौं सुधारा चाहौ राम नाम लीजिए।

नाम लिया जिन्ह सब लिया, छुओ सास्त्र का भेद।
नाम बिना नरकहि गए, पढ़ि पढ़ि चारिउ वेद ॥
नाम चतुर्गुन पञ्च जुत, तासु दुगुन बसु सेष।
बसेउ राम इह जगत में, तुलसी कर मन लेष ॥

अर्थात् श्रीगोस्वामी जी कहते हैं कि अपने २ मन में सब कोई लेखा (हिसाब) लगा करके देखो इस संसार में श्रीरामजी ऐसे बसे हैं। कैसे, सो देखाते हैं कि कोई नाम हो उसको चतुर्गण (चौगुण) कर दीजिए क्योंकि अर्थ, धर्म, काम और

मोक्ष यही चारों फलों का साधन करने के लिए यह मनुष्य शरीर मिला है। इसलिए नाम के अक्षर चौगुण करके पांच और मिला देना चाहिए क्योंकि पंच तत्त्वोंसे शरीर बना है फिर सबको दुगुण कर देना चाहिए क्योंकि पाप और पुण्य दोई का विस्तार सब है उसमें वसुनाम आठ का भाग दे देना चाहिए क्योंकि श्रीगीताजी में भूमि १ जल २ अग्नि ३ वायु ४ आकाश ५ मन ६ बुद्धि ७ और अहंकार यही आठ प्रकारकी प्रकृति लिखी है इसीसे सब माया का विस्तार है सोभाग देकर सबको तोड़ देना चाहिए। शेष रहा जो दो अक्षर श्री रामनाम उन्हीं को हृदय में धारण करना चाहिए और उसी रामनाम को मरे पीछे आप लोग तथा सब संसार राम नाम सत्य है, रामनाम सत्य है" कहते हैं। सोई श्रीरामनाम श्रीशिवजीके इष्ट हैं। इन सब सिद्धान्तों से सतपंच चौपाई का तात्पर्य्य यही है, दूसरा अर्थ करना सर्वथा विरुद्ध है। सब सज्जनों से प्रार्थना है कि यह नव दोहों की चौपाइयां सम्बत १६६१ की लिखी हुई रामायण से शोधी गई हैं। इसमें संदेह न करना चाहिए। और सत पंच चौपाई की पूर्ण व्याख्या जिनको देखनी हो वह "वेदार्थ प्रकाश रामायण" को अवश्य ही देखें॥

श्रीरामनाम जापक सज्जनों से प्रार्थना।

महानुभावो 'श्रीरामनाम के विषय में आप सबको विशेष कहना सूर्य को दीपक दिखाना है। आप सब स्वयं जानते हैं कि रोग निवृत्ति के लिए औषधि थोड़ी खाई जाती है परन्तु संयम बहुत किया जाता है। यह बात सर्वथा निश्चय है कि चाहे औषधि कितने ही उत्तम क्यों न खाई जावे परन्तु बिना संयम किए औषधि गुणकारी नहीं होती है। बलिक वैद्यक

शास्त्रका सिद्धांत है कि बिना संयम किए औषधि खाने से रोगों की वृद्धि होती है। यदि कोई कहे कि औषधि ठीक नहीं है तो यह कहना ठीक नहीं। औषधि ठीक है केवल हमारा संयम पूर्वक सेवन करना ठीक नहीं है यही कहना होगा। कहने का तात्पर्य यह है कि श्रीरामनामका गुण महत्व कम नहीं है। जैसा वेद, शास्त्र, और पुराणों में लिखा है, और संत सब कहते हैं वैसाही महत्व श्रीरामनाम का है। इसमें किंचित् भी संदेह नहीं है। यदि कसर है तो हमारे साधन करने में। सज्जनों, बुरा न मानिए, अपने मनमें खूब विचार करके देखिए। हम लोग रात्रि दिन श्रीराम नामको कितने रटते हैं परन्तु सुख स्वाद कुछ नहीं मिलता है। इसका क्या कारण है। यदि हम लोग सच्चे दिलसे पता लगावें तो यही कहना होगा कि हमारा संयम ठीक नहीं है। यद्यपि महाराज का नाम किसी प्रकार से जपना अच्छा ही है। परंतु संयम सहित जपने से विशेष लाभ होता है। इसलिए संयम अवश्यही करना चाहिए क्योंकि श्रीकबीरजी ने एक दोहे में ऐसा कहा है॥

दोहा।

राम नाम इक औषधी, सतगुरु दिया बताय।
औषधि खावे पथ करे, तब यह वेद न जाय॥

इस दोहे का भाव यही है कि श्रीरामनाम को जपे और संयम करे तब यह जन्म मरण रूप महारोग नाश होता है, नहीं तो नहीं। वह संयम दो प्रकार के हैं एक तो श्रीरामनाम संबंधी संयम है। दूसरा शरीर संबंधी। इसमें नाम संबंधी संयम तो दश नामा पराध है। और शरीर संबंधी संयम "संयम यह न विषय कर आसा।" इत्यादि कहा है। तहां

प्रथम दशनामा पराध लिखते हैं। इसको खूब सावधानता पूर्वक त्यागना चाहिए। यथा पद्म पुराणे श्रीसनत्कुमार उवाच श्रीनारदं प्रति ॥

सतां निन्दा नाम्नः प्रथम मपराधं वितनुते यतः ख्यातिं यातां कथमुप सहते तद्विगर्हिताम्। शिवस्य श्रीविष्णोर्य्यदिह गुण नामादि सकलं भिन्नं पश्येत्सखलु हरिनामा हितकरः॥ गुरोरवज्ञा श्रुतिशास्त्र निन्दनं तथाऽर्थवादो हरिनाम्नि कल्पनम्। नाम्नो बलाद्यस्यहि पाप बुद्धिर्न्न पिद्यते तस्य यमैर्हि शुद्धिः॥ धर्म्म व्रतत्याग हुतादि सर्व शुभ क्रिया साम्य मपि प्रमादः। अश्रद्धधानेप्य मुखेप्य शृखवंति यश्चोपदेशं सना सापराधः॥ श्रुत्वापि नाम माहात्म्यं यःप्रीति रहितोऽधमः। अहममादि परमो नाम्नि सोप्य पराध कृत्॥ अपराध विनिर्मुक्तो पलं नाम्नि समाचरेत्। नाम्नैव तवदेवर्षे सर्वं सेत्स्यति नान्यतः॥

अर्थात् श्रीरामनाम जापक संत की निन्दा करना भारी अपराध है क्योंकि सन्त बिना श्रीरामजीके नाम गुणों को कौन विख्यात् कर सकता है इसलिए सन्त की निन्दा को प्रभु न ही सह सकते हैं यह प्रथम अपराध है १ दूसरा शिवजीके नाम और गुणों को भगवत के नाम गुणों से भिन्न देखे भाव श्रीशिवजी प्रधान नाम जापक हैं। इसलिए स्वामी सेवक को

एक देखना उपासकोंका परम धर्म है। सो न देख करके भिन्न देखे यह दूसरा अपराध है ३ वेद शास्त्र की आज्ञा न मानना और निन्दा करनी भाव हम तो श्रीनाम जापक हैं वेद शास्त्र में क्या धरा है इत्यादि कहना चौथा अपराध है ४ भगवत्के नाम माहात्म्य में अर्थवाद की बुद्धि कल्पना करनी भाव अत्यन्त श्रीनामपरत्व को सुनकर विश्वास न करके कहना कि जैसे तीर्थ व्रतादि की प्रशंसाशास्त्र में लिखी है। वैसा ही रुचि बढ़ाने के लिए केवल प्रशंसामात्र है यथार्थ में नहीं है यह ५ वां अपराध है। श्रीनाम के बल से पाप करना अर्थात् हम तो लाख नाम जपते हैं। जब कि एकबार नाम के लेने से कोटि जन्मों के पाप नाश हो जाते हैं तो हमारे किंचित् पाप भी नाश न होंगे यह छठवां अपराध है उनके पापों को यमराज भी शुद्ध नहीं कर सकते हैं। और धर्म, व्रत, त्याग, योग, यज्ञ, अग्नि होत्रादि कर्मों को अभिमान से अथवा आलस से श्रीरामनाम के बराबर जानना यह ७ वां अपराध है। श्रद्धाहीन को बड़ाई के मारे अथवा लोभ वश होकर नाम महात्म्य कहना ८ वां अपराध है क्योकि श्रद्धाहीन को सुनाने से नाम माहात्म्य निरादर हो जते हैं। आदि पुराण में श्रीकृष्णजी ने अर्जुन से ऐसा कहा है यथा।

भिक्षोपायेन गृह्णन्ति रामनाम परेश्वरम्।
लोका चारेतु निरतास्ते वै पाखण्डिनो ध्रुवम्॥

अर्थात् हे अर्जुन श्रीरामनाम पर ब्रह्म को जो भिक्षा के लिए ग्रहण करते हैं भाव जो द्वार २ श्रीरामनाम को जपकर भिक्षा मांगते हैं और लोका चार(लोक व्यवहार)में रत रहते हैं वे निश्चय करके पाखण्डी हैं। इसलिए लोगों को रिझाने के लिए श्रीरामनाम नहीं जपना चाहिए फिर श्रीरामनाम का

माहात्म्य सुनकर विश्वास और प्रीति न करना यह नौमांअपराध है ६ तथा श्रीरामनाम जपना और मेरा तेरा न त्यागना, वृथा अभिमान करना कि हम बड़े नाम जापक हैं यह दशवाँ अपराध है श्रीसनत्कुमारजी कहते हैं कि हे देवर्षि नारदजी। एक क्षण भरभी अपराध से रहित होकर नाम जपो, नामही से सर्व पदार्थों की प्राप्ति होती है अन्यथा नहीं। इत्यादि कहा है। इन सब अपराधों से रहित होकर श्रीरामनाम जपना चाहिए। तभी श्रीरामनाम महाराज शीघ्र प्रसन्न होते हैं, नहीं तो नहीं।

यह तो श्रीरामनाम संबंधी संयम है और शरीर संबंधी संयम यह है कि पंच विषय और काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सरादि विकारों को त्याग देना चाहिए। तब श्रीराम नाम का प्रभाव हृदयमें प्रकाशित होता है। और प्रथम साधनावस्था में नियम पूर्वक श्रीराम नाम को जपना शास्त्र सम्मत है यथा।

श्रीमद्रामेति नाम्नस्तु नियमं धारणं सदा।
कर्त्तव्यं सावधानेन त्यक्त्वा प्रामादिकं शिवे॥
तावद्वै नियमं कार्य्यं यावच्चित्तं न संस्मरेत्।
अनियमं कृतं जाप्यं निष्फलं प्रथमं प्रिये॥
नियमे नैव श्रीराम नाम्नि प्रीतिर्ध्रुवा भवेत्।
तस्माद्विपर्ययंत्यक्त्वा नियमं सञ्चरे द्बुधः॥

अर्थात् अत्रि संहिता में श्रीशिव जी बोले कि हे शिवे आलस्य अचेतनतादि दोषों को त्याग कर श्रीरामनाम का नियम सावधानता पूर्वक सदा धारण करना चाहिये। तब तक नियम की अति आवश्यकता है जब तक कि चित्त स्वा

भाविक रीति से श्रीराममनाम को स्मरण न करे। विना नियम के प्राथमिकसाधन निष्फल है। नियम पूर्वक जपने से श्रीराममनाम में निश्चय प्रीति होती है। इससे आलस्य आदि विपरीत कर्मों को छोड़ कर नित्य नियम से जप करना चाहिए। यह नियम कम से कम एक लक्ष तो अवश्य होना चाहिए। न्यूनाधिक न हो भाव जो नियम करे उससे कम अधिक जपन करे। गौतमी यतंत्र में लिखा है यथा।

गोपुच्छ सदृशीमाला यद्वा सर्पाकृतिः शुभाः।
नान्यं संत्रं जपेन्मंत्री कंपयेन्न निधूनयेत् ॥
कंपनात्सिद्धि हानिः स्याद्धूननं बहु दुःखदम्।
शब्दे जाते भवे द्रोगः कर भ्रष्टे बिनाश कृत् ॥
छिन्ने सूत्रे भवेन्मृत्यु स्तस्माद्यत्न परोभवेत्।

अर्थात् गोपुच्छ के समान अथवा सर्पा कार मालाशुभदायक होतीहै। अपने इष्टमंत्रों को छोड़कर अन्य मंत्रों को जापक न जपे। और जप करते समय माला न धूने न माला डुलावे। हाथ कपाने से सिद्धि की हानि होती है, धूनने से बहुत दुःख होता है। जपकाल में यदि माला से शब्द हो भाव खट २ हो तो रोग होता है। यदि जपते समय हाथ से माला गिर पड़े तो नाश हो। माला का सूत्र टूटने से मृत्यु हो। इससे यत्न पूर्वक जप करना चाहिए। न बहुत जल्दी बाजी करे न बहुत धीरे ही जपे स्पष्ट जपना चाहिये। और न जपते समय माला में दोनों हाथ ही लगाना चाहिए। सो आज काल यह सब रीति बिगड़ गई हैं। आज काल तो जब तक दोनों हाथ न लगता है तब तक कामही नहीं चलता। सज्जनों ? दास का अपराध क्षमा करना आप स्वयं विचार सकते हैं जब कि उंगली

अंगुल लगाना मना है तब अशुद्ध बामा हाथ कैसे लगाना ठीक है ऐसेही पग पर पग चढ़ा कर, खड़े होकर, चलते हुए भी जप करना मना है। यह सब रीति केवल देखा देखी बिगड़ी है। विशेष देखना हो तो "श्रीवैष्णव कुलभूषण" देखिए। श्री गीताजी के अतिमाध्याय में लिखा है कि शास्त्रोक्त विधि को छोड़ कर जो काम करते हैं वे सुख सिद्धि को तथा परमगति को नहीं प्राप्त होते हैं। इसी से सुख नहीं मिलता है। यदि यह बात किसी महात्मा से कहें तो उत्तर मिलता है कि श्री रामनाम किसी प्रकार से जपना चाहिए। भाँय कुभाँय अनख आलसहूं। नाम जपत मङ्गल दिसि दसहूं। इत्यादि कहते हैं। यह कहना तो हम भी मानते हैं। प्रार्थना केवल यही है कि यदि शास्त्रोक्त विधि भी मिला दें तो सिवाय लाभ के हानीही क्या होगी। इससे विशेष क्या कहें। गुन औगुन जानत सब कोई। जो जेहिं भाव नीक सो तेई। इत्यादि।

अब शरीर संबंधी संयम सुनिए।

श्रीरामनाम जापक सज्जनों को कम से कम चार संयम तो अवश्यही करना चाहिए। प्रथम तो सब साधनों में मुख्य साधन यही है कि चटोरी रसना (जिह्वा) को पुड़ी, कचौड़ी, लड्डू, मालपूवा और तस्मैआदि उत्तम स्निग्ध रसीले पदार्थोंको कभी भूल कर भी न देवे। रूखा सूखा स्वल्प एक बार प्रतिज्ञा पूर्वक भोजन करने का संकल्प कर लेना चाहिए। क्योंकि मनुस्मृति और भागवतादि ग्रन्थों में लिखा है कि रसना सब इन्द्रियों को रस पहुँचाती है, इसीसे सब इन्द्रियां बलवान् होती हैं। एक इसके जीतने से सब इन्द्रियां वश हो जाती हैं यथा "जितं सर्वं जितेरसे" इत्यादि मनुजी ने कहा है। सो यहाँ तो आज काल के नाम जापक सज्जन

लोग पूड़ी, कचौड़ी, मालपूवा और तस्मै देखकर कृतार्थ हो जाते हैं। यदि कहीं से नाम धरौवल न्यौता आगई तो लोट पोट हो जाते हैं कि वाहरे हम्। भला श्रीराम महाराज क्या करें। यह नहीं जानते हैं कि ॥

प्रतिष्ठा शूकरी विष्ठा गौरवं शुद्ध रौरवम्।
अतिमानं सुरापानं तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥

अर्थात् प्रतिष्ठा शुकरी विष्ठा है गौरव महा रौरव नरक के देनेवाला है और अत्यन्त मान (बड़ाई) होना मदिरा के समान है। उससे इन तीनों को त्याग देना चाहिए। तब सुख होता है, नहीं तो वास्तविक सुख दुर्लभ है। इसलिए रसना संयम सब से बढ़कर संयम है। दूसरा दृष्टि संयम अर्थात् किसी को न देखे, क्योंकि दृष्टि सब विकारों का मूल है। सो यह भी संयम नियम पूर्वक धारण कर लेना चाहिए। तीसरा संयम मौन होना है। क्योंकि बोलना भी सब पापों और कलह का बीज है। भागवतादि ग्रन्थों में लिखा है कि किसी की निन्दा स्तुति दोनों न करे यह उत्तम पुरुषों का लक्षण है। मध्यम पुरुष सब की स्तुति करते हैं। नीच लोग सब की निन्दा करते हैं। इसलिये " मौनं सर्वार्थ साधकम् " लिखा है। चौथा संयम हो सके तो एकान्त में निवास करे, क्योंकि संसर्गभी दुःखों के कारण है। इसीलिये श्रीगीताजी में भगवदाज्ञा है कि " असंग शस्त्रेण दृढेन छित्वा " अर्थात् असंग रूप दृढ़ शस्त्र से सन्सार को छेदन करके तब परमपद को प्राप्त होते हैं। इस विषय में पुत्रोपदेश में रानी श्रीमन्दालसा की कथा सबको विदित ही है। इससे एकान्त सब विघ्नों से रहित होने का कारण और सुख का मूल है। बस ये ही चार साधन मुख्य हैं। इनको अवश्य ही करना चाहिए क्योंकि " पद्मपुराण " में लिखा है यथाः—

अशनं संभाषणं शयन मेकान्तं खेद वर्जितम् ।
भोजनादि त्रयं स्वल्पं तुरीये संस्थितिस्तदा ॥
संयमं सर्व्वदा धार्य्यं नैव त्याज्यं कदाचन ।
संयमान्नाम चिन्मात्रे प्रीतिस्संजायतेऽधिका ॥
जपकाले सदादेवि नामार्थंच परात्परम् ।
चिन्तयेच्चेतसा साक्षाद्बुद्ध्या श्रीरामरूपकम् ॥

अर्थात् श्रीशिव जी बोले कि हे देवि जपकाल में सर्वदा नियमसे श्रीरामनाम का अर्थ जो भरतादि भाइयों के सहित परात्पर श्रीसीताराम स्वरूप को हृदय में शुद्ध मन से चिंतवन करके नाम जपे। भोजन, सम्भाषण, और शयन यह तीनों दुःख से रहित एकान्त स्थान में हो भाव शुद्ध अन्न रूखा सूखा स्वल्प एक बार भोजन करे और विचार पूर्वक यथार्थ स्वल्प भाषण करे तीसरा शयन थोरा करे रात्रि में विशेष जागे और भी सब्ब झंझटों से अलग होकर नाम जपे। संयम सदा धारण करे कभी न त्यागे क्योंकि संयम सहित थोरा भी नाम जपने से अधिक प्रीति उत्पन्न होती है। इत्यादि बहुत कहा है इससे संयम अवश्य करना चाहिए। और राम नाम का अर्थ भी अवश्य ही अनु सन्धान करना चाहिए क्योंकि विना नामार्थ को जाने यथार्थ सुख नहीं होता है। वह अर्थ श्रीरामनाम में तत्वबोधक छे मात्राएँ हैं अर्द्ध मात्रा रेफ में श्रीजानकी जी हैं १ रकार में श्रीराम जी हैं २ दीर्घ अकार में विश्वपालक श्रीभरत जी हैं ३ अकार रहित मकार में श्रीलक्ष्मण जी हैं ४ ह्रस्वाकार में श्रीशत्रुघ्न जी हैं ५ मकार में सानुनासिक निरनुनासिक दो भेद हैं। निरनुनासिक अर्द्धचन्द्र सो जीव स्वरूप श्रीवीरभद्र हनुमान् जी हैं

६ इसी में शुद्ध हन्स स्वरूप जीव को अर्थात् अपने स्वरूप को जाने। इसी को आदि पुराण में श्रीकृष्ण जी ने अर्जुन से ऐसा कहा है यथाः-

रामनामार्थमुत्कृष्टं पवित्रं पावनं परम्।
ये ध्यायन्ति सदास्नेहात्ते कृतार्थाः जगत्त्रये॥

अर्थात् श्रेष्ठ श्रीरामनामार्थ परम पवित्र को जो सदा स्नेह से ध्यान करते हैं वे तीनोंलोक में कृतार्थ रूप हैं। इससे नामार्थ को अवश्य चितवन करना चाहिए।

और हो सके तो नाम सम्बन्धी ग्रंथ को अवश्य देखे यथा पद्मपुराणे।

प्रथमाभ्यास काले च ग्रंथं नामात्मकं सुधीः।
द्वियाम मेकयामं वा चिन्तनीयं प्रयत्नतः॥

अर्थात् प्रथम अभ्यास काल में एक प्रहर दो प्रहर श्रीराम नाम सम्बन्धी ग्रंथ को बुद्धिमान् यत्न पूर्वक विचार करे। इत्यादि कहा है। इसलिये पारसभाग, श्रीविनयपत्रिका, और अपूर्व ग्रन्थ श्रीरामनाम कलामणि कोष मंजूषा, तथा और भी जो इस प्रकार के पारमार्थिक ग्रन्थ हों उन्हें एकांत में बैठ कर अवश्य विचारे। कोई २ सन्त कहते हैं कि श्रीरामनाम कलामणि कोष मंजूषा श्रीगोस्वामी जी कृत नहीं है। किसी औरने बनाकर श्रीगोस्वामी जी का नाम धर दिया है। क्योंकि ग्रंथ बहुत कठिन है। सो यह कहना ठीक नहीं। क्योंकि श्रीविनय भी तो कठिन है। ऐसे ही पुराणों में श्रीमद्भागवत भी तो कठिन ही है। फिर श्रीवेद व्यास कृत क्यों मानते हैं। इसलिये यह सब कहना वृथा है। वह स्वयं श्रीगोस्वामीजी कृत है। इसमें संदेह न करना चाहिये। साधन सहित श्रीरामनाम जपना सो भी बहुत ही कठिन है। और यह बात तो

सर्वथा निश्चय है कि विना माया को त्यागे प्रभु में यथार्थ प्रीति नहीं हो सकती है।

और प्रीति मानो की यही पहचान है। जब तक कि संसारी पदार्थों में प्रीति है तब तक श्रीरामजीमें प्रीति होना दुर्लभ है। यह बात पूज्य पाद श्रीगोस्वामीजी ने अपने ग्रन्थों में सर्वत्र ही कही है यथा "जानिए तबहिं जीव जग जागा। जब सब विषय विलास विरागा। होई विवेक मोहभ्रम भागा। तब रघुनाथ चरन अनुरागा॥ जानिए तब मन विरुज गोसांई। जब उर बल विराग अधिकाई॥ रमा विलास राम अनुरागी। तजहिं बमन इव जन बड़भागी॥ सत गुरु पद वचन विस्वासा॥ संजम यह न विषय कर आसा। पुनः विनय पत्रिकायां "मैं हरि साधन करै न जानी। जस आमय भेषजन कीन्ह तस दोष कौन दर बानी। पुनः मैं जानी हरिपद रति नाहीं। सपनेहु नहिं विराग मन माहीं। जे रघुवीर चरन अनुरागी। ते सब भोग रोग सम त्यागी। पुनः जौं मोहि राम लागते मीठे। तौ नव रस षटरस रस अनरस ह्वै जाते सब सीठे। पुनः दोहावल्यां। तुलसी जौंलो विषय की मुधामाधुरी मीठि। तौलो सुधा सहस्र सम राम भगति सुठि सीठि। इत्यादि बहुत कहा है। इन सब वचनों को विचार पूर्वक अपने अपने हृदय का पता लगाना चाहिए कि हमारा हृदय सच्चा है कि झूँठा यदि सच्चा है तो चिन्ता नहिं झूँठा है तो उपाय अवश्य करना चाहिए। क्योंकि "निर्मल जन मन सो मोहि पावा मोहि कपट छल छिद्र न भावा। इत्यादि वचनों पर पूरा ध्यान देना चाहिए।

वक्ता श्रोताका लक्षण

अब कुछ वक्ता और श्रोता के लक्षणों को कहते हैं।

क्योंकि आप सब सर्वदा कथा श्रवण करते हैं। इसलिए वक्ता श्रोता का लक्षण अवश्य ही जानना चाहिए। क्योंकि शास्त्र का सिद्धांत है कि कोई भी कार्य्य हो बिना विधि पूर्वक किए फल नहीं प्राप्त होता है यथाः-

ज्ञात्वाऽज्ञात्वा च कर्माणि जनोय मनुतिष्ठति।
ज्ञानाच्च फलसिद्धिस्या दज्ञानाच्च विपर्य्ययः॥

भाव यह है कि कर्मों को जान कर करने से फलकी सिद्धि होती है और बिना जाने करने से विपरीत फल होता है। इससे ज्ञान पूर्वक कर्म करना उत्तम है नहीं तो "अंधा बांटे जेवरी पीछे वाछा खाय" यह श्रीअग्र स्वामीजी की "कुण्डलिया" चरितार्थ हो जाती है। पद्मपुराण उत्तर खण्ड के १९८ अध्याय में कहा है।

वेद शास्त्रार्थ तत्त्वज्ञो वैष्णवो ब्राह्मणोत्तमः।
दृष्टांत कुशलो धीरो वक्ता कार्य्योऽतिनिस्पृहः।
विष्णु दीक्षा विहीनानां नाधिकारोच कीर्तितः॥

अर्थात् वेदः शास्त्रार्थके तत्त्व जानने वाले वैष्णव ब्राह्मण उत्तम हो। दृष्टान्त देने में कुशल हो धीर हो भाव कथा कहते समय घबड़ावे नहीं और लोभ से अत्यन्त रहित हो। ऐसे को वक्ता (व्यास) बनावे। अवैष्णव को कथा कहने का अधिकार नहीं है। स्कान्द पुराण, वैष्ण व खण्ड, श्रीवेंकटेश्वर माहात्म्य के २७ अध्यायमें लिखा है कि व्यास शुचि, दक्ष, शान्त, राग द्वेष से रहित, साधु, कारुणीक, वाचा शक्तिवाले एवम् इ गुण करके युक्त व्यास होना चाहिए। और जब पण्डित व्य सा गादीपर बैठ जावें तब बिना कथा का प्रसंग

समाप्त हुए दण्डवत् नहीं करना चाहिए क्योंकि कथा का अपमान होता है। व्यास चाहे बालक हो, युवा हो अथवा वृद्ध हो, दरिद्र हो वा भाग्य हीन हो तो भी सदावन्दनीय और पूजनीय हैं। व्यास में नीच बुद्धि कभी न करे। क्योंकि जिनके मुखसे अमृत रूपावाणी निकल कर सहस्त्रों जीवों को भवबंधन से मुक्त करती हैं। व्यास के समान कल्याण कर्त्ता गुरु दूसरा कौन है। इसलिए व्यासजी को सब प्रकार से धन इत्यादि देकर सेवा पूजा करना चाहिए। और लिखा है।

कलौयुगे विशेषेण पुराणश्रवणादृते ।
नास्ति धर्मः परः पुंसांनास्ति मुक्ति प्रदं परम् ॥
पुराण श्रवणं विष्णोर्नाम संकीर्तनं परम् ।
उभेए व मनुष्याणां पुण्य द्रुम महाफले ॥

अर्थात् कलियुग में विशेष करके पुराण श्रवण से अतिरिक्त मनुष्यों के लिये उत्तम मुक्ति प्रद धर्म दूसरा नहीं है। पुराण श्रवण और नाम संकीर्तन यही दो धर्म मनुष्यों के लिए पुण्यरूप वृक्ष के महाफल है। कलियुग में नित्य नियम से जो कथा श्रवण करते हैं वे धन्य हैं। यदि सब दिन कथा श्रवण में असमर्थ हो तो एक मुहूर्त मात्र तदर्ध अथवा क्षण-मात्र भी भगवत्कथा को अवश्य श्रवण करने से कल्याण होता है इसी प्रकार से बहुत ही कहा है। और लिखा है। कि दुष्ट शूद्र, नास्तिक, जहाँ विशेष श्वान हो और जुआ खेलने के स्थान में कथा न कहे। सुन्दर ग्राम, सज्जनों के मध्य में, सुक्षेत्र में, देवमन्दिर में, अथवा किसी पुण्यस्थल में, चाहे नदी तट में कथा कहना चाहिये। और कहा है।

श्रद्धा भक्तिसमा युक्ता नान्यकार्येषु लालसा।
वाग्यताः शुचयोऽव्यग्राः श्रोतारः पुण्य भागिनः॥

अर्थात् श्रद्धा भक्ति युक्त हों अन्य कामों में जिनकी इच्छा न हो वचन संयमी हों भाव मौन होकर कथा श्रवण करें और पवित्रता समेत चंचलता से रहित होकर श्रवण करने से श्रोता पुण्य के भागी होते हैं और कथा में से उठना दोष है। जो कोई पवित्र कथा को शिर में कपड़ा बांध कर सुनते हैं वे पापी मनुष्यों में अधम हैं। पान खाते हुए जो पवित्र कथा को सुनते हैं वे श्वान की विष्ठा जानो भक्षण करते हैं और मर कर नरक में जाते हैं। इससे कथा में पान न खाना चाहिए। जो दंभी अभिमान के मारे उच्चासन पर बैठकर कथा सुनते हैं वे मूर्ख अक्षय नरकों को भोग कर अन्तमें सर्व भक्षी कौवा होते हैं। जो वीरासन पर बैठकर और सिंहासन पर बैठ कर सुनते हैं वे पापी पाप भोगकर अन्त में अर्जुन वृक्ष होते हैं। जो विना प्रणाम किए ही कथा को सुनते हैं वे पाप भोग कर विष वृक्ष होते हैं। जो शयन करके कथा को सुनते हैं वे अवश्य अजगर होते हैं। जो अभिमान के मारे भाव हम तो सब से बड़े हैं नीचे क्यों बैठे ऐसा समझ कर व्यास गादी ही पर एक ओर बैठकर कथा को सुनते हैं वे मूर्ख गुरु स्त्री गमन करने के बराबर पाप को प्राप्त होकर नरक में जाते हैं। जो व्यास की और कथा की निन्दा करते हैं वे निश्चय कर सौ जन्म तक मर कर श्वान होते हैं। जो कथा में प्रश्न करते हैं अथवा वाद विवाद करते हैं वे मर कर गदहा होते हैं बाद फिर गिरगिट होते हैं। जो कभी कथा नहीं सुनते हैं वे घोरनरक भोग कर सूवर होते हैं। जो कथा में विघ्न करते हैं वे

कोटि वर्ष नरक भोग कर ग्रामी शूकर होते हैं। जो औरों के मुख से कथा सुनकर प्रशंसा करते हैं। आप सुनकर औरों को सुनाते हैं वे सब परम पद के अधिकारी होते हैं। इसी प्रकार से बहुत कहा है। सज्जनों को इन बातों पर पूरा ध्यान देना चाहिये।

अन्तिम प्रार्थना।

सज्जनों, हमारी बहुत दिनों से इच्छा रही कि सम्वत् १९८० तक सम्प्रदाय विषयों पर अनेक ग्रंथ रचकर आप सबकी सेवा करके पश्चात् सबको छोड़कर आप सब से आशीर्वाद लेकर परम विश्राम स्थान का आश्रय ले लूँ। सो आप सज्जनों की महती कृपा से आज वह हमारी इच्छा पूर्ण हो गई। अब हमारे अनेक अपराधों को क्षमा करते हुए, यही आशीर्वाद दीजिए जिसे कि हमारी शेष आयु उपरोक्त चारौ साधनों के सहित और दशौ नामापराध से रहित होकर योगियों के सर्वस्व श्री सीताराम नाम में व्यतीत हो इत्यलम्।

ग्रंथकार की गुरु परम्परा।

१ श्रीरामजी महाराज
२ श्रीजानकीजी
३ श्रीहनुमान्‌जी
४ श्रीब्रह्माजी
५ श्रीवशिष्ठजी
६ श्रीपराशरजी
७ श्रीव्यासजी
८ श्रीशुकदेवजी
९ श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी
१० श्रीगंगाधराचार्यजी
११ श्रीसदाचार्यजी
१२ श्रीरामेश्वराचार्यजी
१३ श्रीद्वारानन्दजी
१४ श्रीदेवानन्दजी
१५ श्रीश्यामानन्दजी
१६ श्रीश्रुतानन्दजी
१७ श्रीचिदानन्दजी
१८ श्रीपूर्णानन्दजी
१९ श्रीश्रियानन्दजी
२० श्रीहरियानन्दजी
२१ श्रीराघवानन्दजी
२२ श्रीरामानन्दजी
२३ श्रीअनन्तानन्दजी
२४ श्रीगैसदासजी
२५ श्रीखेमदासजी
२६ श्रीपूर्णवैराठी (बैरागी) जी
२७ श्रीगुञ्जारदासजी
२८ श्रीकृष्णदासजी
२९ श्रीगोपालदासजी
३० श्रीदामोदरदासजी
३१ श्रीलक्ष्मीदासजी
३२ श्रीआनन्दरामजी
३३ श्रीतुलसीदासजी
३४ श्रीविष्णुदासजी
३५ श्रीहरिभजनदासजी
३६ श्रीमहादासजी निर्वाणी
३७ श्रीअयोध्यादासजी
३८ श्रीजानकीदासजी
३९ श्रीमणिरामदासजी
४० श्रीसरयूदासजी
४१ श्रीरामदासजी

—*—